International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 | Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed | Bi-Monthly
Vol. 7 No. 35 | March – April - 2026

हिंदी साहित्य और पर्यावरण : नव संकल्पनाएं

(जल संरक्षण के प्रणेता राष्ट्रकवि डॉ. बृजेश सिंह : जल – पर्यावरण – समाधान के विशेष संदर्भ में ...)

श्री. बापू नानासाहेब शेळके[1], प्रा. डॉ. जितेंद्र पाटिल[2]

[1]*शोध छात्र*

[2]*शोध निर्देशक एवं हिंदी विभाध्यक्ष*

संगमनेर नगरपालिका कला, दा.ज.मालपाणी वाणिज्य एवं ब.ना.सारडा विज्ञान महाविद्यालय संगमनेर (स्वायत्त)

Corresponding Author – श्री. बापू नानासाहेब शेळके

DOI - 10.5281/zenodo.20580119

शोध सार :

'जल ही जीवन है ।' जल के अभाव में मनुष्य अपने अस्तित्व की कल्पना भी नहीं कर सकता । जल प्रकृति का अनूठा उपहार हैं । पृथ्वी की सतह का ७१ % भाग जल से ढका है । लेकिन इसका ९७.५% भाग महासागरों में खारा है । पीने योग्य, कृषि और उद्योग के लिए केवल २.५ – ३ % मीठा जल ही उपलब्ध है । इसमें भी अधिकांश हिस्सा ग्लेशियरों या भूजल के रूप में है । आज वैज्ञानिक रूप से मनुष्य ने काफ़ी विकास कर लिया है लेकिन विकास की इस आंधी में मनुष्य ने प्राकृतिक संपदाओं का दोहनकर स्वयं के अस्तित्व के लिए संकट पैदा कर लिया है । आज संपूर्ण विश्व जल संकट के साथ जल प्रदुषण का सामना कर रहा है । वैश्विक स्तर पर इस समस्या के निदान हेतु प्रयास किए जा रहे हैं । साहित्य और प्रकृति का रिश्ता प्राचीन समय से है । वैदिक साहित्य परंपरा से लेकर हिंदी साहित्य परंपरा तक में जल संरक्षण की चेतना विद्यमान है । हिन्दी साहित्य ने सदैव प्रकृति और पर्यावरण की पूजा की है । हिन्दी ग़ज़लों में भी इस परंपरा का निर्वहन हुआ है ।

हिन्दी साहित्य में जल, जंगल और जीवन के संरक्षण हेतु समाज को जागृत करने की विशाल परंपरा देखी जा सकती है । हिन्दी कवियों एवं कथाकारों ने अपनी कृतियों के माध्यम से जनता को जल संकट से अवगत कराया है । साहित्य समाज का प्रतिबिंब होता है और साहित्यकार अपने समाज और समय का प्रतिनिधि । अपने समाज एवं सामाजिक समस्याओं के प्रति तटस्थ होकर साहित्य सृजन नहीं हो सकता है । साहित्यकार सदैव दूरदृष्टि लेकर चलता है जिस संकट को वह महसूस करता है, समाज को उससे अवगत कराना वह अपना दायित्व समझता है । जल जीवन का पर्याय है । आज संपूर्ण विश्व जल संकट का सामना कर रहा है । इस वैश्विक जल संकट का समाधान निकालने में सम्पूर्ण विश्व लगा हुआ है । राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी जल के संरक्षण को लेकर पर्याप्त कदम उठाए जा रहे हैं ।

बीज शब्द : पर्यावरण, प्रकृति, जल, जल संरक्षण ।

मूल आलेख :

मनुष्य और पर्यावरण का अनन्य संबंध है । वह अपने कार्यों द्वारा पर्यावरण को परिवर्तित करता है तथा स्वयं भी प्रभावित होता है । मनुष्य की विकास यात्रा पर्यावरण के सहारे चली है । प्राचीन काल में मनुष्य का जीवन बहुत सीधा-साधा था । उस समय मनुष्य ने पर्यावरण को अपना साथी माना था । परंतु जब से उसने औद्योगिक विकास कर उत्पादकता बढ़ाई, तब से वह उन्नति के बहाने पर्यावरण का

दोहन कर विनाश की ओर अग्रसर हो रहा है। आधुनिकता और मानवीय विकास के नाम पर पर्यावरण का दोहन हो रहा है। फलत: पर्यावरण-प्रदूषण जैसी भयावह समस्या सामने आई है। मनुष्य ने पर्यावरण का ह्रास किया, उससे छेड़छाड़ कर अपना विकास करना चाहा और अदूरदर्शिता से प्राकृतिक संपदाओं का उपभोग किया, तब से पर्यावरण में अमर्यादित बदलाव आरंभ हुए, जिनके बारे में मनुष्य ने कभी सोचा भी नहीं था। पर्यावरण ह्रास के कारण मनुष्य विनाश की कगार पर खड़ा है। प्रकृति का सबसे बलवान, शक्तिशाली, बृद्धिवान समझा जाने वाला प्राणी पर्यावरण के प्रकोप के कारण आज असहाय, अनाथ, बेबस और उपाहीज बनकर अपना विनाश देखने को विवश है।

सम्पूर्ण सृष्टि में विद्यमान जड़ चेतन सभी पदार्थों की उत्पत्ति प्रकृति में व्याप्त पंचतत्वों से हुई है। ये पंचतत्व हैं :

भूमिरापस्तथा वायुरग्निराकाशमेव च।
गुणोत्तराणि सर्वाणि तेषां भूमिः प्रधानतः॥ [1]

अर्थात् पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि एवं आकाश ये पंचतत्व ही सम्पूर्ण चराचर के चलायमान होने का कारण हैं। भक्तिकालीन कवि तुलसीदास भी रामचरितमानस के किष्किन्धाकाण्ड में यह स्वीकार करते हैं कि मानव शरीर प्रकृति के पंचतत्वों के संयोग से ही निर्मित हुआ है, वे लिखते हैं -

"छिति जल पावक गगन समीरा
पंच रचित अति अधम सरीरा" [2]

पृथ्वी के बाद पर्यावरण का मुख्य घटक है – जल। जल ही जीवन का आधारभूत तत्व है। पृथ्वी की उत्पत्ति और विकास की कहानी में जल की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ऋग्वेद के षष्ट मंडल के ६.५० वे सूक्त में सातवें मंत्र में जल को सम्पूर्ण जगत की जननी कहा है -

"ओमानमापो मानुषीरमृक्तं धात तोकाय तनयाय शं योः।
यूयं हि ष्ठा भिषजो मातृतमा विश्वस्य स्थातुर्जगतो
जनित्रीः॥" [3]

यह मंत्र जल को जीवनदायी, पवित्र और रोगनाशक मानता है। यह ईश्वर से प्रार्थना करता है कि जल हमारे बच्चों और आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वास्थ्य और सुख लेकर आए। जल को ही सभी प्रकार के जीवन की उत्पत्ति का कारण और परम औषध माना गया है। ऋग्वैदिक काल में भी जल पवित्र और पूजनीय था। उस समय के व्यक्ति जल को संरक्षित करने व उसे शुद्ध बनाए रखने के प्रति सचेत थे। ऋग्वेद की ही जल संस्कृति और परंपरा का विकास अथर्ववेद में भी है।

पौराणिक साहित्य में जल के प्रति श्रद्धा की भावना विद्यमान थी। नदियों को पूजनीय माना जाता था। उत्तर वैदिक काल में संस्कृत साहित्य में भी प्रकृति के प्रति सचेतनता विद्यमान है। रामायण, महाभारत एवं कालिदास द्वारा रचित 'मेघदूत' या भवभूति के 'उत्तररामचरित' आदि संस्कृत महाकाव्यों में भी हमें नदियों और जल का वर्णन मिलता है। इस प्रकार भारतीय संस्कृति और साहित्य जल संरक्षण के प्रति प्रारंभ से ही सचेत और क्रियाशील रहे हैं। प्रकृति और प्राकृतिक संपदाओं के प्रति संरक्षण की इस भारतीय परंपरा का निर्वहन हिन्दी साहित्य में भी भली-भांति हुआ है। हिन्दी साहित्य में भी ऐसी अनेक रचनाएँ दृष्टव्य हैं, जिनमें जल संरक्षण की भावना व्याप्त है।

भारतीय संस्कृति के पुजारी, प्रकृति प्रेमी डॉ. बृजेश सिंह पर्यावरण संरक्षण के प्रणेता है। पर्यावरण के संदर्भ में डॉ. बृजेश सिंह द्वारा जितनी ग़ज़लों का प्रणयन हुआ है, उतनी अन्य ग़ज़लकारों की लेखनी से दुर्लभ है। पर्यावरण उनके चिंतन-मनन एवं अभ्यास का विषय बना हुआ है। कवि अखिल 'भारतीय विकास संस्कृति' पर्यावरण परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री हैं। पर्यावरण-चेतना समाज में प्रसारित

करने के लिए वे हमेशा प्रयत्नशील हैं। पर्यावरण के प्रति डॉ.बृजेश सिंह में जो सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक ज्ञान की अनुभूति तथा चिंतन-मनन के मंथन से जो चेतना बनी, वही हिंदी साहित्य में समकालीन ग़ज़ल के रूप में प्रस्फुटित हुई है। अपनी सर्वव्यापक दृष्टि से वे किसी भी समस्या की जड़ तक जाकर उसका समाधान करते हैं। राष्ट्रकवि डॉ. बृजेश सिंह ने अपनी दस हजार शेर वाली महाग़ज़ल में जल के महत्व, जल के संरक्षण, जल के दुरुपयोग आदि बिंदुओं पर लगभग एक हजार शेर लिखे गए हैं।

जल की महत्ता को डॉ. बृजेश सिंह भली-भाँति समझते हैं। इसलिए संसार को जल की आवश्यकता समझाते हैं। जल सृष्टि के विकास और विनाश का आधार है। इसीलिए प्राचीन काल से ऋषियों-मनीषियों-वैज्ञानिकों ने जल की जरूरत को समझाया है। कवि डॉ. बृजेश सिंह जल-पर्यावरण के प्रति समस्त मानव समाज के मंच के अंतर्मन में चेतना भरते हुए कहते हैं–

"जल में ही अंतर्निहीत जीवन-तत्व माना है, प्रकृति प्रदत्त
सबसे बड़ा जल ही खजाना है।
ऋषियों, मनीषियों, वैज्ञानिकों ने हरदम ही, जल को सृष्टि के
विकास का आधार माना है।" [४]

कवि जल को संसार के निर्माण का मुख्य कारण मानते हैं। हमारी संस्कृति और सभ्यताएँ भी जल के सानिध्य में ही पल कर बड़ी हुई है। हमारे सोलह संस्कार जल से ही संपन्न होते हैं। वेद-शास्त्र तथा पुराणों में संसार को जल से निर्मित बताया गया है। इस प्रकार जल-पर्यावरण-चेतना मनुष्य जीवन में अति महत्त्वपूर्ण है –

"जल के सानिध्य में पलती रही हैं सभ्यताएँ, पानी को पीना
पानी से ही नहाना है।
जल से ही होता श्राद्ध जल से ही आचमन, जल के बिना न
धर्म-कर्मकांड हो पाना है।" [५]

जल जीवन है। जल हमारे जीवन और अस्तित्व के लिए परम आवश्यक तत्व है। जल के बिना पृथ्वी पर जीव-सृष्टि की कल्पना भी असंभव है। जीवन के प्रत्येक कार्य में जल उपयोगी है। खाना-पीना, स्वच्छता, पूजा-पाठ, आचार-व्यवहार, विधि-संस्कार, खेती, उद्योग आदि में जल का उपयोग महत्वपूर्ण ही नहीं, आवश्यक भी है। चराचर-जगत् के लिए जल अनिवार्य है। जल जीवों का जीवन तत्व ही नहीं चेतना का अक्षय स्रोत भी है। जल के लिए सारी सृष्टि तड़पती है। ग्रीष्म ऋतु की भीषण तपन से चराचर सृष्टि में बेचैनी पैदा हो जाती है। उमस से भरी प्रकृति व्याकुल नजरों से गगन की ओर निहारती है और बादलों की प्रतीक्षा करती है। जल के बरसते ही धरा पर जीवन अंकुरित होता है। सारी सृष्टि किलकारियाँ लेने लगाती है। कवि कहना चाहते हैं, कि जल के बरसते ही जन-जीवन में चहल-पहल मच जाती है। किसानों में मानों जान आ जाती है। वे जीवन की सारी दरिद्रता, बेबसी, दर्द और यातनाओं को भूलकर दुगुने उत्साह से खेती के काम प्रारंभ कर देते हैं। किसान अन्नदाता है। अत: वह अपने धर्म के पालन में जुट जाता है। यह जल का ही करिश्मा है कि मृत प्राय बंजर धरा फिर से लहलहाने लगती है। वर्षा के जल के कारण बंजर भूमि में सोना उग आता है। इस प्रकार कृषि क्षेत्र में संपन्नता, खुशहाली और उन्नति जल पर ही अवलंबित है। समय पर पानी मिलने से फसल अच्छी आती है, अच्छी फसल के कारण किसानों के परिवारों में खुशहाली छा जाती है। कवि डॉ.बृजेश सिंह ने जल के बरसने से सृष्टि के बदलाव का बड़ा मनोहारी अंकन किया है –

"वर्षा का आना खुशियों का संदेशा लाना है, मुद्दतों से
प्यासी धरा का ह्रदय जुड़ाना है।
ग्रीष्म के आतंक से सूखे सुस्त पड़े थे, पर- नदी नालों का
बारिश आते ख़ुशी से हहराना है।

सभी जीवधारियों के लिए वर्षा सौगात लाई, किसी की किलकारियाँ किसी को टरटराना है।

ग्रीष्म के बाद बारिश उत्सव से कमतर नहीं, किसान का हृदय खुशियों से लहलहाना है।" [६]

जल की सत्ता अवनी-अंबर अर्थात धरती, आकाश, पाताल, ब्रह्मांड आदि सभी जगह है। जल का महत्व पर्यावरण में अक्षुण्ण एवं अवर्णनीय है। हर पदार्थ में जल की सत्ता है। धरती पर सातों समुद्रों में जल व्याप्त है और नदियाँ आए दिन जल को बहाकर धरती को हरी-भरी करती रहती है। पृथ्वी पर जल की सत्ता अधिक है। सारी पृथ्वी का तीन चौथाई भाग जलमय है फिर भी जल अमूल्य है। इसलिए इसके महत्व को सभी ने समझ कर जल का रक्षण करना आवश्यक है। कवि जल के रक्षण का आह्वान करते हुए लिखते हैं –

"जल नहीं होता तो सब कहाँ होते इसलिए, पानी को सबने जीवन कारक माना है।

पृथ्वी पर पानी की महत्ता का अंदाज इसी से, तीन चौथाई हिस्से में जल का भराना है।

सृष्टि का सबसे अनमोल रतन जल 'बृजेश', पानी को पानी की तरह नहीं बहाना है।" [७]

कुदरत के करिश्में को बयाँ करते हुए डॉ. बृजेश सिंह जल के रहस्य को अधोरेखित करते है। मनुष्य जीवन में ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है, जहाँ 'जल' की उपयुक्तता न हो। जल-संसाधन के मानव समाज के लिए अनगिनत उपयोग हैं। मनुष्य जल का उपयोग पीने के अतिरिक्त स्नान करने, कपड़े धोने, मछली पालने, सिंचाई, परिवहन, औद्योगिक क्षेत्र आदि में करता है।

"जल के बिना कुछ दिन भी रह सकते कहाँ हम, नहाना या पीना या फिर भोजन पकाना है।

साफ-सफाई, खेतों के लिए भी तो जल चाहिए, जल की महत्ता के आगे सबको सर नवाना है।" [८]

धार्मिक अनुष्ठान और सांस्कृतिक पर्वो में भी जल की उपयोगिया अद्वितीय है। भारत में गणेश उत्सव, नवरात्रि, होली ,दिवाली, रंगपंचमी जैसे अनेक त्यौहारों में जल का महत्त्व है। जल के बिना इन पर्वों का कोई महत्व नहीं है। ग़ज़लकार ने सांस्कृतिक पर्वों के अवसर पर जल की बेवजह बर्बादी से मानव जाति को सावधान करते है। और त्योहार के मूल भाव को समझने का आव्हान किया है –

"जितना जल होली रंग खोने में लगाना है, कई गुना अधिक, रंग छुड़ाने में खर्चाना है।

होली पर्व पवित्र, पवित्रता बनाये रखना है, पर्यावरण दृष्टि से नहीं अभिशाप बनाना है।

होली में छिपे तात्विक भाव समझना जरूरी, फकत स्वजनों से मिल गिले शिकवा मिटाना है।" [९]

समस्त प्राणियों के जीवन का आधार जल है। जल के अभाव में पृथ्वी पर जीव-सृष्टि की कल्पना भी निरर्थक है। जीवों का प्रत्येक कार्य जल के सहारे ही संभव होता है। आधुनिक युग में सभ्यता के विकास के साथ जल-प्रदूषण की गंभीर समस्या निर्माण हुई है। आज विश्व की सबसे ज्वलंत समस्याओं में 'जल-प्रदूषण' की समस्या प्रमुख है। जनसंख्या वृद्धि के साथ ही जल की खपत बढ़ती गई, परंतु इसके स्रोत सीमित होने के कारण जल-संकट निर्माण होता गया। बड़े-बड़े ज्ञानी, महाज्ञानी, विचारक, चिंतक, समाजशास्त्री एवं पर्यावरण प्रेमी लगातार भविष्यवाणी कर रहे हैं कि अगला विश्वयुद्ध तेल के लिए नहीं अपितु जल के लिए लड़ा जाएगा। आज उनके इस कथन में सच्चाई नजर आती हैं। वास्तव में जिस धरती का दो-तिहाई हिस्सा जलमय हो, फिर भी वहाँ पीने के जल की उपलब्धता मर्यादित हो; तब यह चिंता और चिंतन का विषय बन जाता है। आज धरती पर जो पेय जल उपलब्ध है, वह भी प्रदूषण की चपेट में है। स्वच्छ जल जीव-जंतुओं और वनस्पतियों के लिए अमृत तुल्य है, किंतु वही जल दूषित होने पर विष

के समान हो जाता है। परिणाम स्वरूप अनेक जानलेवा बीमारियाँ निर्माण होकर मनुष्य जीवन के साथ समस्त जीव-सृष्टि को बाधा पहुँचाती है।

जल संरक्षण के प्रति उदासीन भाव देखकर कवि आहत होते है। जल जीवन का पर्याय है, फिर भी उसे प्रदूषित करके जीवन को नष्ट करने की होड़ में मनुष्य लगा हुआ है। कारखानों का गंदा पानी खुले आम जीवनदायिनी नदियों में छोड़ा जा रहा है। अनेक प्रकार के जहरीले रसायन, प्लास्टिक का कचरा, शहर की गंदगी आदि को नदियों में छोड़कर जल को प्रदूषित किया जा रहा है। डॉ. बृजेश सिंह कहते हैं, कि नदियों के किनारे बसें महानगरों ने अनुशासन की सारी हदे पार कर दी है। मनुष्य की इस अतिवादी प्रवृत्ति के कारण समस्त जीव सृष्टि बारूद के ढेर पर खड़ी हो गई है–

"जिस पानी को जीवन का पर्याय माना है, उसी पे
उदासीनता का भाव अपनाना है।
कारखानों का प्रदूषित अवशिष्ट खुलेआम, जीवदायिनी
नदियों में बेरहमी से मिलाना है।
जिन नदियों को मोक्षदायिनी कहा जाता रहा, खुदगर्जी में
अंधे हो नरक कुंड बनाना है।
नदी तट के नगरों ने सारी हदें पार कर दी, नदियों में गटर का
पानी बेधड़क गिराना है।
शुद्ध जल का अभाव जहाँ सभ्यताएँ मिट गयीं, प्रदूषित करने
का अर्थ जीवन मिटाना है॥" [१०]

वर्तमान मानव समाज को जल संरक्षण के प्रति कवि सजग करते हैं। वे जल के महत्व के साथ-साथ दूषित जल के दुष्परिणामों को भी रेखांकित करते हुए मनुष्य को फटकारते हैं। दूषित पानी पीने के लिए अयोग्य तो हैं ही, परंतु उससे नहाने से भी आदमी को अनेक प्रकार के खतरों का सामना कर पड़ सकता है। इस वजह से डॉ. बृजेश सिंह जल को प्रदूषित और बर्बाद करने से बार-बार रोकते हैं।

डॉ. बृजेश सिंह जल की महत्ता को भली-भाँति समझते हैं। इसलिए संसार को जल की आवश्यकता समझाते हैं। जल सृष्टि के विकास और विनाश का आधार है। इसीलिए प्राचीन काल से ऋषियों-मनीषियों-वैज्ञानिकों ने जल की जरूरत को समझाया है। आज वह समय आ गया है कि, हम हमारे पूर्वजों की बात पर गौर करें। जल संरक्षण को जीवन का मुख्य लक्ष्य बनाए। साधु, संतों, ऋषियों आदि ने भी जल को परमावश्यक माना है। इसलिए हमें अपने पूर्वजों के संस्कारों को याद करके जल प्रदूषण का समाधान खोजना होगा। कवि जल प्रदूषण के प्रति समस्त मानव समाज के अंतर्मन में चेतना भरते हुए कहते हैं –

"ऋषियों, मनीषियों, वैज्ञानिकों ने हरदम ही, जल को सृष्टि के
विकास का आधार माना है।
मनीषी जलविज्ञानवेत्ता को प्रणम्य मानते, अपने ज्ञान से
जिन्हें जग को तृप्त कराना है।
अंतर्मन से आज सबको संकल्प लेना है कि, जल संरक्षण
जीवन का मुख्य लक्ष्य बनाना है॥" [११]

सारांश :

इस प्रकार सारांश रूप में कह सकते हैं, कि कवि डॉ.बृजेश सिंह ने जल के महत्व एवं उपयोगिता को मार्मिक रूप में अंकित किया है। कवि ने जल के महत्व एवं उपयोगिता को समझाने के लिए जल की वैज्ञानिक संरचना से लेकर जल की आध्यात्मिक महत्ता तक का विस्तृत आख्यान किया है। साथ ही जल के विविध क्षेत्र में होते उपयोग को भी अधोरेखित किया है। कवि जल प्रदुषण को लेकर चिंतित है। वे प्रकृति के इस अद्भूत तोहफे की पवित्रता बनाए रखते हुए जल संरक्षण का आह्वान करते हैं।

संदर्भ :

१. विकिस्त्रोत : महाभारत – भीष्मपर्व (अध्याय ५, श्लोक ४)

२. विकिस्त्रोत : श्रीरामचरितमानस (किष्किन्धाकाण्ड) – गोस्वामी तुलसीदास

३. विकिस्त्रोत : ऋग्वेद (मंडल ६, सूक्त ६.५०, मंत्र ७)

४. जल – पर्यावरण – समाधान : राष्ट्रकवि डॉ. बृजेश सिंह, सं. शशिभूषण तिवारी, पृष्ठ सं.४८

५. वही - पृष्ठ सं.१०२

६. वही - पृष्ठ सं.५७

७. वही - पृष्ठ सं.८१

८. वही - पृष्ठ सं.८८

९. वही - पृष्ठ सं.१६०

१०. वही - पृष्ठ सं.९९

११. वही - पृष्ठ सं.४८